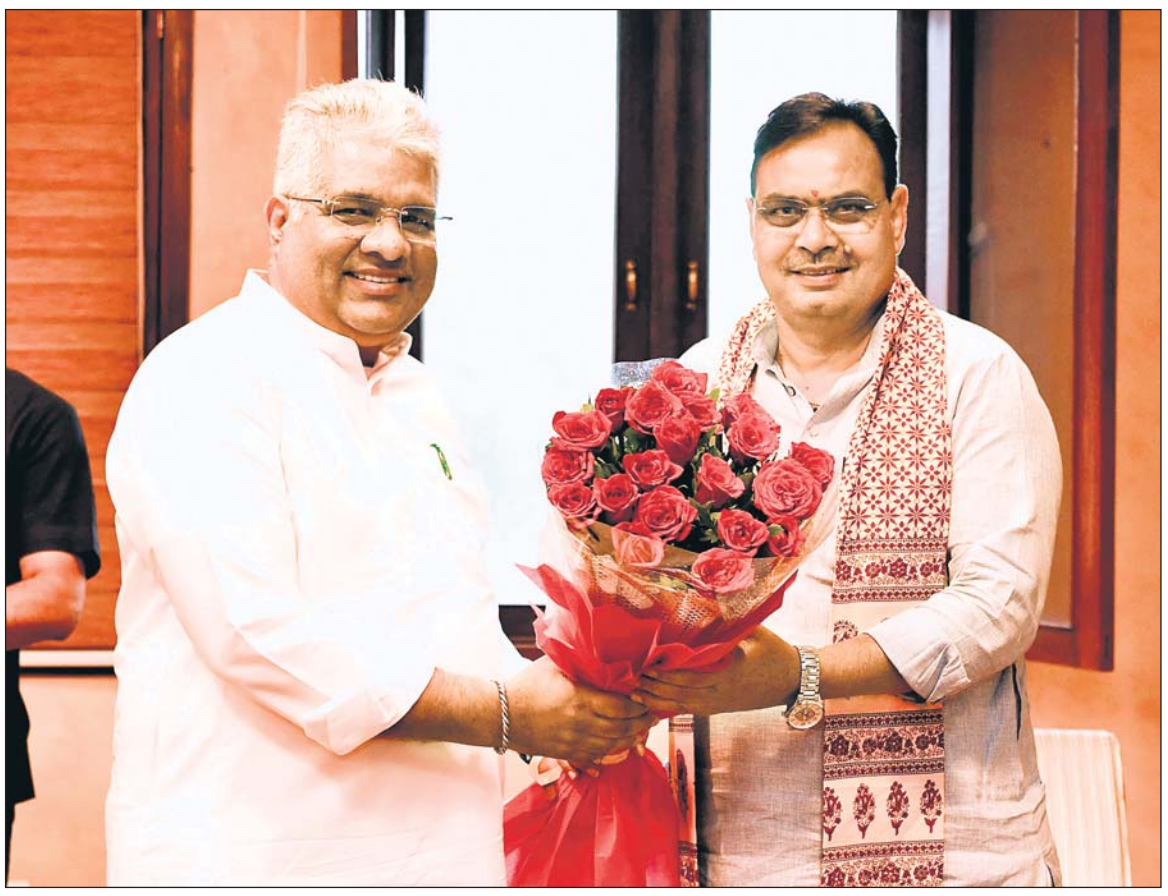

मुख्यमंत्री कार्यालय में केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से शिष्टाचार भेंट की।

बंगाल के राज्यपाल के खिलाफ कथित यौन उत्पीड़न का मामला सुप्रीम कोर्ट पहुँचा

राजभवन की एक महिला कर्मचारी ने राज्यपाल सी वी आनंद बोस के खिलाफ कथित यौन उत्पीड़न के आरोप लगाये हैं

- **अपनी याचिका में महिला ने दावा किया कि राज्यपाल को दी गई संवैधानिक प्रतिरक्षा के कारण वह असहाय हो गई है। याचिकाकर्ता ने शीर्ष अदालत से गुहार लगाई है कि, यौन उत्पीड़न के आरोपों की जांच करने के लिए वह बंगाल पुलिस को आवश्यक निर्देश दे।**

नई दिल्ली, 4 जुलाई (वार्ता)। पश्चिम बंगाल राजभवन की एक महिला कर्मचारी ने वहां के राज्यपाल सी वी आनंद बोस के खिलाफ कथित यौन उत्पीड़न के आरोपों की जांच के लिए उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है। अपनी याचिका में महिला दावा किया कि राज्यपाल को दी गई संवैधानिक प्रतिरक्षा के कारण वह उपचारविहीन हो गई है। याचिकाकर्ता ने शीर्ष अदालत से गुहार लगाई है कि यौन उत्पीड़न के आरोपों की जांच करने के लिए वह पश्चिम बंगाल पुलिस को आवश्यक निर्देश दे। याचिका में संविधान के अनुच्छेद 361 के तहत संवैधानिक व्यक्ति को प्राप्त प्रतिरक्षा की सीमा तक दिशानिर्देश और योग्यता निर्धारित करने का भी अनुरोध किया गया है।

संविधान के अनुच्छेद 361 (2) में कहा गया है कि राष्ट्रपति या किसी राज्य के राज्यपाल के खिलाफ उनके कार्यकाल के दौरान किसी भी अदालत में कोई आपराधिक कार्यवाही न तो शुरू की जा सकती या जारी नहीं रखी जा सकती है।

याचिका में उक्त प्रावधान का हवाला देते हुए दलील दी गई है कि ऐसी शक्तियों को पूर्ण नहीं समझा जा सकता, जिससे राज्यपाल को ऐसे कार्य करने का अधिकार मिल जाए जो अवैध हों या जो संविधान के भाग तीन की बुनियाद पर प्रहार करते हैं।

याचिका के अनुसार, याचिकाकर्ता ने अपनी शिकायतों को उजागर करते हुए राजभवन को एक शिकायत भी लिखी थी, लेकिन संबंधित अधिकारियों द्वारा कथित निष्क्रियता बरतते हुए उसे अपमानित किया गया और मीडिया में उसका मजाक उड़ाया गया। उसे राजनीतिक हथियार बताया गया, जबकि उसके आत्मसम्मान की कोई सुरक्षा नहीं की गई।

याचिकाकर्ता ने यह भी तर्क दिया कि कोई भी व्यक्ति कानून से ऊपर नहीं और संवैधानिक छूट की आड़ में राज्यपाल को किसी भी तरह से अनुचित तरीके से कार्य करने और लैंगिक हिंसा करने की अनुमति नहीं है, जबकि देश के हर दूसरे नागरिक को ऐसा करने से प्रतिबंधित किया गया है।

शिकायतकर्ता महिला ने याचिका में कहा है कहा कि यह (विशेष अधिकार) सीधे तौर पर संविधान के तहत उसके साथ ही (याचिकाकर्ता) सहित प्रत्येक व्यक्ति को दिए गए मौलिक अधिकारों पर हमला करता है।

याचिका में कहा गया, इस मामले में पीड़िता (याचिकाकर्ता) को झूठा बनाना, जबकि यह सुनिश्चित करना कि आरोपी/माननीय राज्यपाल खुद बेदाग हैं। सत्ता का ऐसा अनियंत्रित प्रयोग एक गलत मिसाल कायम करेगा, जिससे यौन पीड़ितों को कोई राहत नहीं मिलेगी। यह संवैधानिक लक्ष्य का पूर्ण उल्लंघन होगा।

याचिकाकर्ता ने दो मई 2024 को संबोधित प्रभारी अधिकारी को एक लिखित शिकायत दी, जिसमें राज्यपाल पर बेहतर नौकरी देने के बहाने उसका यौन उत्पीड़न करने का आरोप लगाया गया।

डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने मंत्री पद से इस्तीफा दिया

इस्तीफे की घोषणा के साथ डॉ. किरोड़ी ने एक्स पर लिखा ''रघुकुल रीत सदा चली आई प्राण जाई पर वचन ना जाई''

- **किरोड़ी ने बताया कि, उन्होंने 5 जून को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को इस्तीफा भेज दिया था और 25 जून को व्यक्तिशः मुलाकात कर इस्तीफा दिया, जिसे मुख्यमंत्री ने अस्वीकार कर दिया था**
- **डॉ. किरोड़ी ने कहा कि, अपने क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी को नहीं जिता पाने पर मैंने इस्तीफा देने का प्रण लिया था। इसलिए मैं इस्तीफा दे रहा हूं। मुझे पार्टी संगठन एवं सरकार से कोई शिकायत नहीं है।**
- **डॉ. किरोड़ी ने इस्तीफा मेल करने के बाद पुरी के पीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती के प्राकट्योत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में शिरकत की और मंच से इस्तीफा देने की सार्वजनिक घोषणा की।**

जयपुर, 4 जुलाई। राजस्थान की भजनलाल सरकार के कैबिनेट मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने गुरुवार सरकार के सभी सभी पदों से इस्तीफा दे दिया है। राजस्थान में लोकसभा चुनाव 2024 के परिणामों के बाद से ही डॉ. किरोड़ी लाल के इस्तीफे की अटकलें चल रही थी। पूर्वी राजस्थान की सीटों पर हार की जिम्मेदारी लेते हुए किरोड़ी लाल मीणा ने इस्तीफा दिया है। मंत्री किरोड़ी लाल लोकसभा चुनाव परिणाम आने के साथ ही सरकारी सुविधाएं छोड़ दी थी।

बता दें कि किरोड़ी मीणा सोशल मीडिया सहित कई मंचों पर इस्तीफा देने के संकेत दे रहे थे। अब उन्होंने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को मंत्री पद से त्यागपत्र भेज दिया। इस्तीफा देने के साथ ही डॉ. किरोड़ी ने सुबह 10:50 पर अपनी सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर एक रामचरितमानस चौपाई पोस्ट की ''रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाई पर बचन न जाई।।''

इससे पहले भी वो इन्हीं पंक्तियों के जरिए अपने इस्तीफे के संकेत दे चुके थे।

किरोड़ी लाल मीणा ने कहा कि मैंने 5 जून को अपना इस्तीफा मुख्यमंत्री को भेज दिया था। उसके बाद 25 जून को मैंने मुख्यमंत्री से मिलकर उन्हें अपना इस्तीफा सौंपा था। लेकिन उन्होंने इस्तीफे को पूरी तरह से ठुकरा दिया। जिसके बाद मैंने उन्हें इस्तीफा मेल कर दिया है और इसकी घोषणा आज कर दी है। उन्होंने कहा– ''मुझे मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इस्तीफा देने से मना किया था, लेकिन मैं मंत्री पद से इस्तीफा दे चुका हूं।''

मीणा ने कहा जैसा कि आप लोग जानते हो की अथक परिश्रम के बाद भी मैं अपने प्रभाव वाले क्षेत्र में पार्टी को जिता नहीं सका। मैंने चुनाव के दौरान घोषणा कर दी थी। उस घोषणा को मैंने पूरा किया है। उन्होंने कहा कि दिन रात मैंने जनता के लिए संघर्ष किया। ना दिन देखा ना रात। लेकिन जनता ने मेरी नहीं मानी। मुझे निराश किया। इसलिए मैंने अंतरात्मा की आवाज पर पद छोड़ दिया।

उन्होंने कहा मेरी मुख्यमंत्री से कोई शिकायत नहीं है ना ही कोई संगठन से शिकायत है। ना ही कोई अपेक्षा है और ना ही मुझे कोई पद चाहिए। ईमानदारी से कह रहा हूं, मैं अपनी पार्टी को नहीं जिता सका। मेरी यह असफलता हैं और उसी असफलता के कारण मैंने इस्तीफा दिया है। डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने कहा कि जब मैं सरकार था। तब मैंने आर.ए.एस. भर्ती परीक्षा को स्थगित करने की मांग की थी। वह परीक्षा स्थगित कर दी गई। हॉर्टिकल्चर की जमीन कौड़ियों के भाव में अलवर में बेच दी थी। मैंने सरकार का ध्यान आकर्षण किया। तो वह बिक्री निरस्त हो गई। जल जीवन मिशन के घोटाले की सी.बी.आई. जांच की मांग मैने सरकार से की थी। सरकार ने सी.बी.आई. को जांच दे दी। सरकार में था तब भी जनता के मुद्दों को मजबूती से रखने का काम किया। आगे भी यह चलता रहेगा।

किरोडी लाल मीणा के भतीजे और दौसा की महुवा सीट से विधायक राजेंद्र मीणा ने भी जून में मीडिया से बातचीत में साफ तौर पर कहा था कि किरोडी जल्द अपने मंत्री पद से इस्तीफा देने वाले हैं।

इस्तीफा देने के बाद डॉ. किरोडीलाल मीणा ने गुरुवार को जयपुर में एक धार्मिक कार्यक्रम में शिरकत की और मंत्री पद से इस्तीफा देने की घोषणा की। इसी कार्यक्रम में मंच से अपने संबोधन में डॉ. किरोडीलाल मीणा ने आज के राजनीतिक हालात पर चिंता जाहिर की। डॉ. किरोड़ी गोवर्धन मठ पुरी पीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती के प्राकट्ययोत्सव पर आयोजित राष्ट्रोत्कर्ष दिवस कार्यक्रम में शामिल हुए उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि रेल हादसे में कई लोगों की जान जाने पर उन्होंने नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए रेलमंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया था। ऐसी उच्च आदर्शों वाली राजनीति की आज आवश्यकता है।

इस्तीफे का तात्कालिक कारण?

जयपुर, 4 जुलाई। डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने मंत्री पद से इस्तीफा देने की सार्वजनिक घोषणा गुरुवार को सुबह की लेकिन सरकार ने बुधवार रात को ही विधानसभा में जवाब देने के लिए दो मंत्रियों के बीच उनके विभागों का बंटवारा कर दिया।

जानकारी के अनुसार, डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने कृषि मंत्री के पद से 5 जून को ही मुख्यमंत्री को इस्तीफा भेज दिया था और 25 जून को उन्होंने खुद मिलकर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को इस्तीफा सौंपा था।

हालांकि मुख्यमंत्री ने इस्तीफा स्वीकार नहीं किया था। लेकिन विधानसभा के बजट सत्र के दौरान उनके

- **बताया जाता है कि, विधानसभा में डॉ. किरोड़ी के विभागों से संबंधित सवालों का जवाब देन के लिए राज्य सरकार ने उनके विभागों को दो मंत्रियों में बांट दिया था, इसलिए किरोड़ी ने आनन-फानन में इस्तीफे की अधिकृत घोषणा कर दी।**

विभागों से सम्बंधित सवालों के जवाब देने के लिए सरकार ने बुधवार रात दो अन्य मंत्रियों को विभागों की जिम्मेवारी सौंप दी तथा इसके आदेश भी जारी कर दिए थे।

सूत्रों का कहना है कि शायद इसी कारण से डॉ. किरोड़ी ने गुरुवार सुबह इस्तीफा मेल कर दिया और सोशल मीडिया पर भी इसकी जानकारी दे दी।

सरकारी सूचना के अनुसार आपदा प्रबंधन राज्य मंत्री ओटाराम देवासी ग्रामीण विकास विभाग, आपदा प्रबंधन, सहायता और नागरिक सुरक्षा विभाग के सवालों का जवाब देंगे और राज्य मंत्री के.के. विश्नोई कृषि विभाग, जन अभियोग निराकरण विभाग और उद्यान विभाग के सवालों का जवाब देने के लिए अधिकृत होंगे।

कोटा में एक और छात्र ने आत्महत्या की

- **मृतक छात्र संदीप, बिहार के नालंदा से यहां जे.ई.ई. की तैयारी करने आया था। अब तक कोटा में विद्यार्थियों द्वारा सुसाइड की 11 घटनाएं हो चुकी हैं।**

कोटा, 4 जुलाई (निसं)। देशभर से मेडिकल और इंजीनियरिंग एंट्रेंस की कोचिंग करने आने वाले स्टूडेंट्स के सुसाइड के मामले लगातार बढ़ते ही जा रहे हैं। गुरूवार को एक और कोचिंग छात्र ने आत्महत्या कर ली। मृतक संदीप बिहार के नालंदा का रहने वाला था और जे.ई.ई. की तैयारी कर रहा था। संदीप का भाई भी कोटा में रहकर नीट (यू.जी.) की तैयारी कर रहा है।

संदीप महावीर नगर थर्ड इलाके में एक मकान में बतौर पी.जी. रहता था। आत्महत्या की सूचना भी उसके सामने वाले रूम में रहने वाले छात्र ने मकान मालिक को दी थी। क्योंकि उसके कमरे की लाइट जल रही थी और वह फंदे से लटका हुआ नजर आया था। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और उसके शव को फंदे से उतारकर अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया। महावीर नगर थाना अधिकारी महेंद्र मारू का कहना है कि मृतक बिहार के नालंदा का निवासी है। वह बीते एक साल से कोटा में रहकर जे.ई.ई. की तैयारी कर रहा था। इसका भाई भी कोटा में रहकर ही नीट यू.जी. की तैयारी कर रहा है। दोनों भाई एक ही कोचिंग संस्थान में पढ़ते हैं लेकिन संस्थान की बिल्डिंग अलग-अलग है। इसलिए उसका भाई दादाबाड़ी में रहता है। वह भी सूचना मिलने पर संदीप के पीजी में पहुंच गया था।

यह इस वर्ष का ग्यारहवां सुसाइड केस है। सुसाइड की रोकथाम के लिए जिला प्रशासन ने सभी हॉस्टल और पीजी में पंखों में एंटी सुसाइड रॉड (हैंगिंग डिवाइस) लगाने के निर्देश दिए हैं लेकिन अधिकांश पी.जी. में ऐसी रॉड नहीं है इस पी.जी. में भी नहीं है। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंचे महावीर नगर थाने के सब इंस्पेक्टर कमल किशोर का कहना है कि करीब पांच साल पहले मृतक छात्र के माता-पिता की मृत्यु हो गई थी। दोनों भाइयों को उनके चाचा ही पढ़ा रहे थे और वह रेलवे में नौकरी करते हैं। उन्होंने मृत्यु की सूचना मिलने पर आने में असमर्थता जताई। उन्होंने सहमति दी कि मृतक के भाई की उपस्थिति में ही उसका पोस्टमार्टम करवा दिया जाए। ऐसे में उसके शव को पोस्टमार्टम करवा कर उसके भाई को सौंप दिया गया। मकान मालिक ने बताया कि रात को करीब 9.30 बजे वह मैस से खाना खाकर आया था। इस दौरान उससे बात हुई थी। वह अपने कमरे में चला गया था। यह बात भी सामने आई है कि एक दिन पहले ही बुधवार को उसके चाचा ने उसके खाते में पैसे भी डलवाए थे। घटनाक्रम में सामने आया है कि छात्र देर रात 12 बजे तक पढ़ाई कर रहा था। मौके पर कोई सुसाइड नोट नहीं मिला। इसलिए सुसाइड के कारणों का पता नहीं चल पा रहा है। यह भी पता चला है कि संदीप नियमित रुप से कोचिंग संस्थान भी नहीं जाता था और अक्सर छुट्टी करता था।

आवंटित ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में बिल्डर से 40 लाख रुपए में विक्रय पत्र के जरिए एक फ्लैट खरीदा। बिल्डर ने उसे चौपहिया वाहन की पार्किंग पीपी 601 आवंटित की। वह नियमित तौर पर पार्किंग की जगह का उपयोग करता रहा। लेकिन बिल्डर ने उसे आवंटित की गई कार पार्किंग की जगह में से कुछ जगह अन्य फ्लैट मालिक को बेच दी। परिवादी ने कहा कि उसने बिल्डर से अपनी पार्किंग से अन्य वाहन हटवाने का आग्रह किया, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। इसलिए उसे विक्रय पत्र के अनुसार समान नाप व पैमाइश की जगह ही पार्किंग के लिए मुहैया कराई जाए।

राहुल गांधी ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

समस्याएं सुनीं। ये मेहनती मजदूर हिंदुस्तान की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। इनके जीवन को सरल और भविष्य को सुरक्षित करना हमारी जिम्मेदारी है।

केजरीवाल ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वाई चंद्रचूड़ को लिखे लेटर में वकीलों ने कहा है कि केजरीवाल की जमानत अर्जी पर जज फैसला लेने में देरी कर रहे हैं।

मुकेश ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

टर्न'' अनुग्रह किया है, सिवाय उन अवसरों के, जब मुकेश अंबानी उन्हें पीछे छोड़ दिया है। आगामी समय इस दृष्टि से रोचक रहेगा।

हेमन्त सोरेन द्वारा पुनः मु.मंत्री...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पद से हटा कर हेमन्त ने उनका अनादर किया है तथा वे सत्ता लोलुप व अवसरवादी हैं। इस तर्क के विरोध में इतना ही कहा जा सकता है कि ऐसे मामलों में भाजपा का स्वयं का रिकॉर्ड भी प्रशंसनीय नहीं है क्योंकि इसी तरह के एक केस में आदिवासी नेता सर्बानंद सोनवाल को असम के मुख्यमंत्री पद से हटाकर हमेन्त बिस्वा शर्मा के मुख्यमंत्री बनने का मार्ग प्रशस्त किया गया था।

रांची में सत्ता परिवर्तन के वास्तविक कारण राजनीतिक हैं। हालांकि, चम्पई एक सीनियर एवं सम्मानीय नेता हैं, किन्तु उन्हें आदिवासी वोटों के अलावा अन्यत्र समर्थन प्राप्त नहीं है। हेमन्त में वोटर्स में सिम्पैथी फैक्टर पैदा करने की क्षमता है और ओ.बी.सी., अनुसूचित व अन्य जातियों में भी उनकी भारी स्वीकार्यता है। हाल ही सम्पन्न लोकसभ चुनाव में चम्पई की सीमित राजनीतिक अपील का पता तब चला जब राज्य की कुल 13 लोकसभा सीटों में से इण्डिया गठबन्धन सिर्फ 5 ही जीत सका।

इंडिया ब्लॉक के द्वारा जीती गई सीटों में राजमहल, दुमका व सिंहभूम जे.एम.एम ने जीती थी तथा कुंती व लोहरदगा सीटें कांग्रेस ने जीती थी। दूसरी तरफ भाजपा ने सात सीटों पर विजय पाई थी जबकि एन.डी.ए. के सहयोगी दल ए.जे.एस.यू. एक सीट जीतने में कामयाब हुआ था। यदि लोकसभा के नतीजों में विस्तार होता है विधानसभा के नतीजों में रूपान्तरित होते हैं तो भाजपा का पलड़ा भारी नज़र आता है।

यदि संपूर्ण इंडिया गठबंधन को मौका मिला है तो हेमन्त सोरेन सर्वश्रेष्ठ स्थिति में हैं। यह भी महसूस किया गया कि यदि मुख्यमंत्री चम्पई के नेतृत्व में इंडिया गठबंधन विजयश्री मिलती है तो चुनाव पश्चात् के परिदृश्य में उनको हटाना बहुत मुश्किल हो जाएगा। चूंकि अब हेमन्त ने इस दाव को अपने हाथ में ले लिया है इसलिए उन्हें बहुत सावधानी से चलने की आवश्यकता है और उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि उनके इस नये कदम के तहत चम्पई को पूरा आदर व सम्मान दिया जाए। संभावना तो यह है कि चम्पई को पार्टी का कार्यकारी अध्यक्ष बनाया जाएगा, इसके साथ ही अटकलें यह भी हैं कि हेमन्त सोरेन की नवगठित सरकार में चम्पई को महत्वपूर्ण मंत्रालय से नवाजा जाएगा।

प्र.मंत्री की आठ व नौ जून की रूस यात्रा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उद्देश्यों के अनुकूल भी है। वे पश्चिमी दुनिया के पसंदीदा उदार लोकतांत्रिक मॉडल में संघर्ष को लेकर एक वैकल्पिक सिस्टम प्रस्तुत करना चाहते हैं।

चीन के प्रभुत्व वाली किसी व्यवस्था के प्रतिरोध में पारम्परिक मतभेदों के अलावा बेलारूस को एस.सी.ओ. में शामिल किया जाना, शायद भारत के बर्दाश्त की हद थी। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने सम्मेलन में भाग लेने आए देशों से एक अनुरोध कर अपने कूटनीतिक इरादे जाहिर कर दिए थे। उन्होंने इन देशों का आव्हान किया था कि वे अमेरिका की अधिकृत व्यवस्था से परे अपने उद्देश्यों को लेकर स्वतंत्र रूप से आगे बढ़े और विकास के अधिकारों के लिए संघर्ष करें।

शी ने आज ही कहा कि एस.सी.ओ. के सदस्य देश अपनी सुरक्षा संरचना में ''बाहरी ताकतों'' के हस्तक्षेप के किसी भी प्रयास का प्रतिरोध करें। हालांकि, इसमें अन्तर्निहित विरोधाभास था इस फोरम में रूस की उपस्थिति का होना, जबकि रूस अपने पड़ोसी देश यूक्रेन पर बिना किसी कारण के आक्रमण कर चुका है। रूस के आक्रमण की पृष्ठभूमि में जब इस संगठन का पहला शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया था तब प्रधानमंत्री मोदी ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को स्पष्ट कर दिया था कि ''यह समय युद्ध का नहीं बल्कि मतभेदों और विवादों को वार्ता एवं बातचीत के जरिए हल करने का है। तब मोदी के इस मैसेज की यूक्रेन पर रूस के आक्रमण को लेकर पुतिन से पहली प्रत्यक्ष झड़प के रूप में प्रशंसा की गई थी। मोदी ने उसके तुरंत बाद अमेरिका का दौरा किया था, जहां वॉशिंगटन में उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया और उनके सम्मान में वाइट हाउस में राजकीय ''डिनर'' रखा गया। उन्हें अमेरिकी सीनेटर्स को संबोधित करने का सुअवसर भी प्रदान किया गया।

अब एक बार पुनः भारत को रूस के साथ रक्षात्मक भूमिका निभानी है। रूस के द्वारा यूक्रेन पर हमला करने के बाद अमेरिका व पश्चिमी देशों की ओर से उस पर लगाए गए प्रतिबंधों से त्रस्त है। इसके चलते रूस को पूर्ण रूप से अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय से अलग-थलग करने के प्रयास किए जा रहे थे।

परन्तु इस बार भारत ने पश्चिमी देशों के इस खेल में शरीक होने से मना कर दिया था। बल्कि भारत ने रूस से कम मूल्य पर तेल खरीदना जारी रखा जो भारत के हित में रहा था। इस तरीके से भारत रूस को मदद करने में प्रमुख भागीदार रहा।

भारत के हित भी रूस के साथ बंधे हुए हैं, क्योंकि वह भारत को मुख्य रूप से सेना के लिए अस्त्र-शस्त्र सिस्टम की आपूर्ति करता रहा है। यह इसलिए अति महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत हिमालय की सीमाओं पर चीन से शत्रुता का सामना कर रहा है। इसलिए भारत को विभिन्न कारणों के मुद्देनज़र बहुत ही मुश्किल व सूक्ष्म कूटनीतिक खेल अपने हितों की रक्षार्थ खेलना है।

भारत के प्रधानमंत्री इन सब परिस्थियों के चलते एस.सी.ओ. की बैठक में भाग नहीं लेकर सीधे रूस की यात्रा पर जा रहे हैं।

आदिवासियों का ''डी.एन.ए. टैस्ट'' करवाने के बयान पर मदन दिलावर के इस्तीफे की मांग पर अड़ा विपक्ष

सदन में दिनभर भारी हंगामा करने के बाद विपक्ष ने दोपहर में सदन की कार्यवाही का बहिष्कार कर वॉक आउट किया

- **एक बार तो हालात इतने बिगड़े कि विपक्षी विधायक वैल में उतर आए और सत्ता पक्ष के साथ गुत्थमगुत्था होते-होते बचे। गनीमत रही कि, आनन-फानन में विधानसभा के मार्शलों ने मोर्चा संभाला और उन्हें एक-दूसरे से अलग किया।**
- **स्पीकर डॉ. वासुदेव देवनानी को 2 बार सदन की कार्यवाही स्थगित करनी पड़ी। बाद में जब सदन पुनः जुटा तो स्पीकर ने दोनों पक्षों को संयम रखने की नसीहत दी और कहा कि, ''विधानसभा के इतिहास में आज सदन की कार्यवाही तार-तार होते बची है।''**

-विधानसभा संवाददाता-

जयपुर, 4 जुलाई। आदिवासियों को हिंदू बताने और उनका ''डी.एन.ए. टैस्ट'' करवाने के तथाकथित बयान पर शिक्षा मंत्री मदन दिलावर गुरूवार को दिनभर विधानसभा में घिरते नजर आए। कांग्रेस और आदिवासी विधायकों ने दिनभर सदन में हंगामा करते हुए मदन दिलावर से माफी मंगवाने और उनका इस्तीफा दिलवाने की मांग रखी। इस मुद्दे पर सदन में हंगामा इतना बढ़ा कि, विपक्षी विधायक वैल में उतर आए और सत्ता पक्ष के साथ गुत्थमगुत्था होते-होते बचे। आनन-फानन में विधानसभा के मार्शलों ने मोर्चा संभाला और उन्हें एक-दूसरे से अलग किया। हालात बिगड़ते देख विधानसभाध्यक्ष डॉ. वासुदेव देवनानी को 2 बार में सदन की कार्यवाही 1 घंटे के लिए स्थगित करनी पड़ी। बाद में जब सदन पुनः जुटा तो स्पीकर ने दोनों पक्षों को संयम रखने की नसीहत दी और कहा कि, विधानसभा के इतिहास में आज सदन की कार्यवाही तार-तार होते बची है। हालांकि, कांग्रेसी विधायक अपनी ज़िद पर अड़े रहे और अध्यक्ष के वक्तव्य के बाद पूरा विपक्ष शेष कार्यवाही के लिए सदन से वॉकआउट कर गया। इसके बाद विपक्ष की गैरमौजूदगी में ही सदन में रीको और डेयरी के वार्षिक प्रतिवेदनों पर चर्चा की गई।

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने सदन में कहा कि, मदन दिलावर ने आदिवासियों पर बेहद निंदनीय टिप्पणी की है और अपने बयान पर माफी नहीं मांगी है, मुख्यमंत्री ने भी उनसे इस्तीफा भी नहीं लिया है, हमारी ये दो ही प्रमुख मांगें हैं।

इससे पहले अपने बयान को लेकर शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कहा कि, ''आदिवासियों ने हमारी संस्कृति को बचाया है। आदिवासी समाज के बारे में कोई नकारात्मक चर्चा करना मेरे मन में कभी नहीं रहा। मैं यह जानता हूं कि अनादि काल से इस देश में आदिवासी रहता आया है और आदिवासी समाज का सब सम्मान करते हैं। मैंने बिरसा मुंडा जी का नाम भी सुना और पढ़ा है। बिरसा मुंडा भगवान के नाम से जाने जाते हैं, ऐसे समाज के बारे में मुझे लेकर जो कहा जा रहा है, वह कदापि सही नहीं है।''

दिलावर ने स्पष्ट किया कि मेरे से एक पत्रकार ने पूछा था कि ''सांसद राजकुमार रोत ने ऐसा कहा है कि आदिवासी हिंदू नहीं हैं, तो मेरा कहना था कि आदिवासी हिंदू हैं, हिंदू रहेंगे। आदिवासी समाज अनादिकाल से पृथ्वी पर रहता आया है, हम सब आदिवासी ही हैं। क्योंकि हम आदिकाल से यहां रहते आए हैं। मैं आदिवासी महापुरुषों को प्रणाम करता हूं, नमन करता हूं। जब पत्रकार ने दोबारा पूछा कि वो तो अपने आप को हिंदू नहीं मानते हैं तो मैंने कहा, ''वह प्रासंगिक है कि नहीं कि वंशावली दिखवा लेंगे।'' मंत्री के इस स्पष्टीकरण से विपक्ष संतुष्ट नहीं हुआ और मंत्री के इस्तीफे की मांग को लेकर सभी विपक्षी सदस्य नारेबाजी करते हुए हाथों में तख्तियां लेकर वैल में आ गए। प्रदर्शन करते हुए दिलावर की ओर विपक्षी सदस्यों को बढ़ते हुए देख सत्तापक्ष के सदस्य और मंत्री भी वैल में आ गए। दोनों पक्ष आपस में भिड़ते, इससे पहले ही मार्शलों ने बीच में आकर स्थिति संभाल ली। इस बीच सदन की कार्रवाई आधा घंटे के लिए स्थगित कर दी गई।

इससे पहले प्रश्नकाल में विधानसभा में मंत्री मदन दिलावर दो बार सवालों का जवाब देने खड़े हुए तो दोनों ही बार विपक्ष ने उनका जवाब नहीं सुना और नारेबाजी शुरू कर दी। इस पर दिलावर ने हंगामे के बीच कहा, ''कांग्रेस के लोग आदिवासियों के दुश्मन हैं, ये हिंदुओं के दुश्मन है। ये हिंदुओं को हिंसक मानते हैं। ये आदिवासियों को हिंदू नहीं मानते हैं, हिंदुओं के दुश्मन हैं।''

गुरूवार को सदन में प्रश्नकाल के दौरान जब मंत्री मदन दिलावर ने सवालों के जवाब देने शुरू किए तो उसके साथ ही विपक्ष ने जमकर नारेबाजी शुरू कर दी। भारत आदिवासी पार्टी के तीनों विधायकों के साथ ही कांग्रेस के सभी विधायकों ने वैल में आकर मदन दिलावर के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। इस दौरान उन्होंने मंत्री दिलावर से उनके बयान पर माफी मांगने की मांग उठाई और इस्तीफा देने के लिए कहा। इसी बीच सत्ता पक्ष ने भी विपक्ष के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। ऐसे में प्रश्नकाल के दौरान कुछ ही सवालों के जवाब आ पाए। कई विधायकों की ओर से उठाए गए पूरक प्रश्नों के जवाब भी हंगामे की भेंट चढ़ गए।

ज्ञातव्य है कि मदन दिलावर के जिस कथित बयान पर हंगामा हो रहा है वह यह है कि ''आदिवासी हिंदू हैं या नहीं यह उनके पूर्वजों से पूछेंगे या वंशावली लिखने वालों से पूछेंगे वो कौन हैं। यदि हिंदू नहीं है तो उनका डी.एन.ए. टैस्ट करेंगे।''

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2009/28296 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600